❋ निवेदन ❋

सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या येनानुपासिता ।
जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चैव जायते ॥

अर्थ-जिसने सन्ध्या नहीं जानी और जिसने सन्ध्योपासन नहीं किया वह जीवित पुरुष भी शूद्र है और मरने पर श्वान होता है।

सर्व साधारण को विदित हो कि-'सन्ध्योपासन' द्विजातिमात्रका प्रतिदिनका मुख्य कर्म है, जिसके न करनेसे द्विज प्रायश्चितका भागी होता है और किसी कर्मका भी अधिकारि नहीं होसकता। और जो सन्ध्या करते भी हैं तो मन्त्रोंके अर्थ नहीं जानते, बिना अर्थके समझे यथार्थ फल नहीं होता। इसकारण इस सन्ध्याविधि पुस्तक का सरल भाषाटीका बनाकर समस्त द्विजाति के हितार्थ प्रकाशित किया जाता है। आशा है सज्जन इससे लाभ उठावेंगे।

निवेदकः-भगवद्दत्तशर्मा, अमरोहा।

॥ श्रीहरिः ॥

अथ संध्याविधिः ।

भाषाटीकासहित ।

जिसमें परब्रह्मका सम्यक् ध्यान किया जाता है उसे सन्ध्या कहते हैं; जिसकी विधि यह है- ब्राह्ममुहूर्तमें (दोघड़ी रात रहे) उठकर, शौच स्नानके अनन्तर पूर्व को मुख करके बैठे (पूर्वको मुख करने की विधि केवल प्रातःकाल और मध्यान्हकी सन्ध्यामें ही है, सायंकालको पश्चिम की ओर मुख करके बैठे) फिर (ॐ केशवाय नमः स्वाहा । ॐ नारायणाय नमःस्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा) इन तीन मन्त्रों से आचमन करके बांये हाथमें जल लेकर आगे लिखे हुए "अपवित्रः" इत्यादि मन्त्रको पढ़ता हुआ दांये हाथमें लिये हुए कुशसे शरीर पर मार्जन करे (जल छिड़के)।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा ।

यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॥

अन्वय और पदार्थ-(अपवित्रः)अपवित्र(वा) या (पवित्रः) पवित्र (अपि वा) अथवा (सर्वाऽवस्थां गतः) किसी दशामें प्राप्त हुआ भी (यः) जो मनुष्य (पुंडरीकाक्षम्) कमलनेत्र भगवान्‌का (स्मरेत) शुद्धान्तःकरणसे स्मरण करे तो (सः) वह पुरुष (बाह्याऽभ्यन्तरः)बाहर भीतरकी अपवित्रतासे(शुचिः)शुद्ध होजाता है (पुण्डरीकाक्षः) कमलनेत्र भगवान् हमको (पुनातु) पवित्र करें ।

फिर अपने सम्प्रदाय के अनुसार यथारुचि भस्म-चंदनादिका तिलक धारण करके आगे लिखेहुए "ओंभूर्भुवः" इत्यादि गायत्रीमन्त्र को पढ के चोटी में गांठ लगावे ।

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजुः—अ०॥३६॥ मं० ॥३॥

अन्वय और पदार्थ-(यः) जो (भर्गः) सूर्यमण्डलान्तर्गत ज्योतिर्मय पुरुष (नः) हम लोगोंकी (धियः) बुद्धियोंकी तरंग-रूप वृत्तियोंको धर्म—अर्थ-काम--मोक्षके उपायों में (प्रचोदयात्) प्रेरणा करता है अर्थात् स्वभावसे ही प्रवृत्त करता है उस (देवस्य) प्रकाशमय (सवितुः) सब पदार्थों के उत्पादक ईश्वरके(तत्)उस (वरेण्यम्) मुमुक्षु आज्ञानियों को स्वीकार करने योग्य तेजःस्वरूप का हमलोग (धीमहि) निरन्तर ध्यान करें वा करते हैं ।

फिर दांये हाथमें जल लेकर आगे लिखे हुए संकल्पको पढ़े ।

ॐ अद्य पुण्यतिथौ उपात्तदुरितक्षयाय श्रीपरमेश्वर प्रीतये प्रातः सन्ध्योपासनमहं करिष्ये ॥

भा० आज इस पवित्र तिथिमें अमुकगोत्र नामक मैं शरीरमें व्याप्त सकल पापोंके नाश करनेको श्रीपरमेश्वरकी प्रसन्नताके अर्थ प्रातःकाल का सन्ध्योपासन कर्म करता हूं।

फिर आगे लिखेहुए विनियोगको पढ़कर हाथ में जल लेकर छोड़देय।

ओं पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः कूर्मो देवता सुतलं छंदः आसने विनियोगः ॥

भा०—'पृथ्वि त्वया' इत्यादि आगे लिखेमन्त्रको मेरुपृष्ठऋषि है और कूर्मदेवता है सुतल छंदहै, आसनके पवित्रकरनेमें विनियोग है

फिर आगे लिखेहुए 'पृथ्वि त्वया' इत्यादि मन्त्रको पढ़कर आसन पर जल छिड़के।

ओं पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

अन्वय और पदार्थ--(हे पृथिव) हे पृथ्वीअभागिनी देवता! (त्वया) तुमने (लोकाः) सम्पूर्ण लोक (धृताः) धारणकिये हैं (हे देवि) हे देवि! (त्वम्) तुम (विष्णुना) विष्णुभगवान से (धृता) धारण कीगईहो इसलिये (देवि)हे देवि!(त्वम्) तुम (माम्) मुझको (धारय)धारण करो (च) और (आसनम्) आसनको (पवित्रम्) शुद्ध (कुरु)करो।

फिर गायत्रीमन्त्र को पढ़ता हुआ अपने चारों ओर जल फेरकर रक्षा करे,तदनन्तर 'अघमर्षणसूक्तस्य' इत्यादि विनियोगको पढ़कर जल छोड़े

ओं अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिर्भाववृतो देवता अनुष्टुप्छन्दः अश्वमेधावभृते विनियोगः॥

भा०-'ऋतमित्यादि' अघमर्षण (पापनाशक) सूक्तका(अघ-

मर्षणऋषिः) अघ नाम पापके नाशक ऋषि, मन्त्रका भावार्थ ही देवता तीन मन्त्रका सूक्त है तीनों अनुष्टुप् छन्द हैं, अश्वमेध यज्ञान्तर्गत अवभृथ-स्नानमें इसका विनियोग है।

कि आगे लिखेहुए ऋतञ्च' इत्यादि मन्त्रको पढ़ताहुआ आचमनकरे

ओं ऋतञ्च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः ॥१॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २ ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥३॥ ऋ० १०। १। १९॥

अन्वय और पदार्थ-(अभीद्धात्) दोनों ओर से प्रकाशित

(तपसः) प्रजापतिके तपके (अधि) पश्चात् (ऋतं च सत्यं चाजायत) स्थूल जलका कारण रवि वा अप् नामक मानस सत्यसंकल्प ऋत और स्थूल सूर्य वा अग्निका कारण प्राणपदवाच्य सत्य ये दोनों ऋत और सत्य प्रकट हुए (ततः) तदनन्तर (रात्रि) प्रकाशरहित अधिष्ठानसहित पृथिव्याधिष्ठात्री देवता पृथिवी (अजायत) प्रकट हुई (ततः) तदनन्तर(समुद्रोऽर्णवः) जलोंका सन्तानस्थान अन्तरिक्ष प्रकट हुआ (अर्णवात्समुद्रात्) नीलिमरूप सूक्ष्म जलसहित अन्तरिक्षके (अधि) पश्चात (संवत्सरः) प्रत्यक्ष सूर्य(अजायत) उत्पन्न हुआ तदनन्तर(मिषतः) निमेषादि चेष्टायुक्त सब (विश्वस्य) जगत्को (वशी)वशमें रखने वाला प्रजापति (अहोरात्राणि) दिन रात आदि कालविभागों

को (विदधत्) निश्चल करता बनाता है (धाता:) सबका धारक प्रजापति परमेश्वर (सूर्याचन्द्रमसौ) सूर्य और चन्द्रमाको (स्वर्दिवं च पृथिवीम्) सुखभोग प्रधान स्वर्ग और पृथिवी मर्त्यलोक (अथो) और (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष लोकको (यथापूर्वम्) पूर्व कल्पोंके तुल्य नामरूप वाले (अकल्पयत्) रचना करता हुआ।

फिर नीचे लिखे मन्त्रों में जिन २ अंगों का नाम आया है उन २ अंगों का स्पर्श करता हुआ अंगन्यास करे।

ओं वाक्। ओं प्राणः। ओं चक्षुः २। ओं श्रोत्रम् २। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतलकरपृष्ठे॥

भा०—ईश्वरकी कृपा से उपर्युक्त सब अङ्गोंमें हमलोगोंकी शक्ति

बनीरहे इसकारणहीं। ओंसबअंगोंके प्रथम लगाकर बोलनेकीरीतिहै फिर आगे लिखेमन्त्रोंसे उन२अंगोंकाप्रोक्षणकोजिनअंगोंकानाममंत्रोंमेंआया

ओं भूः पुनातु (शिरसि) ओंभुवः पुनातु (नेत्रयोः) ओंस्वः पुनातु (कण्ठे) ओंमहः पुनातु (हृदये) ओं जनः पुनातु (नाभ्याम्) ओं तपः पुनातु (पादयोः) ओं सत्यं पुनातु (पुनःशिरसि) ओं खंब्रह्म पुनातु (सर्वत्र)

भा०—इन सब व्याहृतियोंका अर्थ प्राणायामके मन्त्र में लिखेंगे।

फिर आगे लिखे 'ओंकारस्येत्यादि' चारों विनियोगों को पढ़कर प्रत्येक विनियोग के अन्त में जल छोड़े।

ओंकारस्य ब्रह्माऋषिर्दैवीगायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः ॥ १ ॥ ओं भूरा-

दिसप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निर्वाय्वादित्यबृहस्पतिर्वरुणेन्द्राविश्वेदेवा देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः ॥ २ ॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिः सविता देवता गायत्रीछन्द उपनयने प्राणायामे जपे विनियोगः ॥ ३ ॥ ॐ गायत्रीशिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता प्राणायामे विनियोगः ॥ ४ ॥

भा० — ॐकारका ब्रह्मा ऋषि, गायत्री देवी छन्द है अग्नि देवता शुक्लवर्ण और सब कर्मों के आरम्भ में विनियोग है ॥ १ ॥ भूः आदि

सात व्याहृतियोंका प्रजापति ऋषि गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप्बृहती पंक्ति-त्रिष्टुप्-जगती-क्रमसे सात छन्द, अग्नि वायु सूर्य बृहस्पति वरुण, इन्द्र और विश्वेदेवा ये क्रमसे सात देवता तथा शास्त्रोंमें जिसका प्रायश्चित्त नहीं कहा उस प्रायश्चित्तमें और प्राणायाम में विनियोग है ॥१॥ गायत्री मंत्रका विश्वामित्र ऋषि, सविता देवता गायत्रीछंद, उपनयन प्राणायाम तथा जप में विनियोग है ॥२ गायत्री शिरका प्रजापति ऋषि, यजुः छंद, ब्रह्मा अग्नि वायु-सूर्य देवता और प्राणायाम में विनियोग है ॥ ४ ॥

इसप्रकार विनियोगका स्मरण करके नीचे लिखे मन्त्र से प्राणायाम करे जिसकी यह विधि है कि-पहले पलोथी मारकर बैठे नेत्र मूँदले और मौन होकर मनही मन से प्राणायाम मन्त्र को अर्थ सहित तीनवार पढ़ता हुआ कनिष्ठिका (पहिली) तथा अनामिका (दूसरी) अँगुली

से नासिका के बायें स्वर को छुड़ाकर दाहिने स्वर से धीरेधीरे वायुको खैंचता हुआ नाभि में नीलकमल की समान श्यामवर्ण चतुर्बाहु विष्णु भगवान् की मूर्तिका ध्यान करे इसको पूरक प्राणायाम कहते हैं और जब तीनबार मन्त्र पढ़चुके तब दाहिने स्वरको भी अंगूठे से बन्द करले और श्वास रोककर उसी प्राणायाम मन्त्रको मनही मनमें तीन बार पढ़ता हुआ हृदयमें लालवर्ण चतुर्मुख ब्रह्माजी की मूर्तिका ध्यान करे इसका नाम कुम्भक प्राणायाम है जब मंत्र पूरा होजाय तो बांये स्वर से दोनों अँगुली हटा ले और दाहिने स्वर को अंगूठे से वैसेही बन्द रक्खे बांये स्वरसे धीरे २ श्वासको उतारता हुआ तीनबार प्राणायाम मंत्र को पढ़े और जब तक मन्त्र पूरा हो तब तक मस्तकमें श्वेतवर्ण महादेवजीकी मूर्तिका ध्यान करे इसका नाम रेचक प्राणायाम है । प्राणायाम के समय पढ़नेका मन्त्र यह है ।

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः
ओं सत्यम् ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात् । ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥

अन्वय और पदार्थ-(यः) जो (भर्गः) आदित्यमण्डलान्तर्गत ज्योतिर्मय पुरुष (नः) हमलोगों की (धियः) बुद्धि की तरङ्ग रूप वृत्तियों को धर्म अर्थ काम और मोक्षके उपायों में (प्रचोदयात्) प्रेरणा करता है अर्थात् स्वभाव से ही प्रवृत्त करता है। वह भर्ग तेज स्वरूप चिदात्मा कैसा है कि (ओं) अग्नि में तेजःरूपसे विद्यमान (भूः) पृथिवी जिसका शरीर पृथिवी में पृथ्वी ही के रूपसे विद्यमान (भुवः) अंतरिक्ष जिसका शरीर और उसमें उसीके रूपसे विद्यमान (स्वः) स्वर्गमें स्वर्गरूपसे विद्यमान और स्वर्ग जिसका शरीर (महः) महर्लोकमें उसीके रूपसे

विद्यमान और महर्लोक जिसका शरीर (जनः) जनोलोक में उसीके रूप से विद्यमान और जनोलोक जिसका शरीर (तपः) तपोलोक में उसीके रूप से विद्यमान और तपोलोक जिसका शरीर (सत्यम्) सत्य नाम ब्रह्मलोक में उसीके रूपसे विद्यमान और सत्यलोक जिसका शरीर है फिर वह अर्थ आत्मज्योति कैसा है कि—(आपः) जलमें उसीके रूप से विद्यमान और वरुणलोक जिसका शरीर है (ज्योतिः) सूर्य चन्द्र-नक्षत्रादि ज्योतियों में उन्हीं २ के रूपसे विद्यमान और ज्योति जिसका शरीर है (रसः) जिस रसकी लेशमात्र प्राप्तिसे प्राणियोंको सुख आनन्द प्राप्त होता है रसरूप वही है (अमृतम्) वायु आकाशादि में जो अविनाशीपन है वह आत्म-

ज्योतिका ही स्वरूप है (ब्रह्म) ब्रह्मस्वरूप भी वही आत्मज्योति है।(भूर्भुवः स्वः)सत्वगुण-रजोगुण-तमोगुणरूप जो तीन महाव्याहृति हैं वह भी आत्माज्योति भर्गका ही स्वरूप है(ओम्)प्रणव-उद्गीथ ओंकारस्वरूप भी वही भर्ग है ऐसे (देवस्य) प्रकाशमय (सवितुः)सकल पदार्थोंके उत्पादक ईश्वर के (तत्) उस(वरेण्यम्) मुमुक्षु वा ज्ञानियों को स्वीकार करने योग्य तेजःस्वरूप का हम लोग (धीमहि) निरंतर ध्यान करें वा करते है ।

तदनन्तर आगे लिखे 'सूर्यश्च' इत्यादि विनियोगको पढ़कर जल छोड़े।

ओं सूर्यश्चत्यस्य ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता । अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

भ०—'सूर्यश्च' इस मंत्रका ब्रह्माऋषि, प्रकृति छंद और सूर्य

देवता है, जलके आचमन करने में विनियोग है ।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि । इदमहममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

अन्वय और पदार्थ (सूर्यश्च) आदित्यगत सूर्याभिमानी चेतन-देव सूर्यनारायण (मन्युश्च) यज्ञकर्माभिमानी देव द्वितीय पक्ष में मन्यु नाम क्रोध (मन्युपतयश्च)यज्ञके रक्षक इंद्रियादि देवता, क्रोधकेपक्षमें क्रोधकेरक्षक इंद्रियोंके अभिमानी देव, ये सब देवता (मन्युकृतेभ्यः)अङ्गहीन वा विधिरहित किये यज्ञादिसे होने वाला

तथा क्रोधसे हुवे (पापेभ्यः)पापोंसे (मां) मुझको (रक्षन्तां) बचावें । मैंने (रात्र्या) रातके समय (मनसा) मनसे मन्यके साथ द्रोह अन्यके पदार्थके लेलेनेकी इच्छा तथा धर्ममें अश्रद्धा अविश्वास रूप(वाचा)वाणी से झूठ कठोर अयोग्य औरोंकी निंदाके शब्दोच्चारणरूप (हस्ताभ्यां) हाथों से दूसरे की वस्तु को बिना माँगे लेना वा किसीका मारना पीटनारूप (पद्भ्याम्)पैरों से चलने द्वारा जीवोंका मारणारूप (उदरेण)उदरसे अभक्ष्य वा अपथ्य वस्तु के खाने पीनेसे हुवे (शिश्ना) शिश्नेन्द्रियसे शास्त्राज्ञासे विरुद्ध अपनी वा पराई स्त्रीके साथ मैथुनरूप (यत्) जिस२(पापम्) पापको (अकार्षम्) किया है (रात्रि) रात्रिका अभिमानी देवता (तत्) उस २ पापरोपको (अवलुम्पतु) नाश करदेव (मयि)मुझ में (यत्) जो (किंचित्) कुछ (दुरितं) पाप हो उसका (इदम्)

इस आचमन के लिये जलसे (अहम्) मैं (अमृतयोनौ) अमृत नाश ओमके कारण (सूर्ये ज्योतिषि) हृदयस्थ अध्यात्म सूर्य—ज्योति अन्तर्यामी परमात्मामें भस्मीभूत होने के लिए (जुहोमि) होम करता हूँ (स्वाहा) वह ठीक २ होम होजावे।

अथ ब्रह्मकार्य के समय आचमन से पहिले नीचे लिखे विनियोग को पढ़ कर जल छोड़दे फिर मंत्र पढ़कर आचमन करे।

ॐ आपः पुनन्त्विति मन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दःआपोदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

भा०—आपः पुनन्तु इस मन्त्रका विष्णु ऋषि, अनुष्टुप् छन्द और जल देवता आचमन करनेमें विनियोग है।

ॐ आपःपुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् ॥ यदुच्छिष्टम-

भोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापो ऽसतां च प्रतिग्रहं स्वाहा।

अन्वय और पदार्थ—(आपः) आचमनके वास्ते हाथमें लिये जल (पृथिवीम्) पृथिवीके विकार इमारे इस पार्थिव-शरीरको (पुनन्तु) पवित्र करें तथा(ब्रह्मणस्पतिः) ज्ञान रूप-वेदके रक्षक चेतनशक्ति रूप आत्माको जल (पुनन्तु) पवित्र करें और जलोंसे (पूता) पवित्र हुई (पृथ्वी) पृथिवी स्थूल पार्थिवदेह(माम्) मुझ अध्यासरूप जीवको (पुनातु) पवित्र करे। तथा (ब्रह्मपूता) वेदमन्त्रोंके उच्चारण से पवित्र हुई पृथ्वी नाम पार्थिव शरीर अथवा वाणी (माम्) मुझको (पुनातु) पवित्र करे।

मैंने (यदुच्छिष्टम्) अन्यके भोजनसे बचे झूंठे अन्नको जो

खाया तथा (अभक्ष्यम्) धर्मशास्त्रादिमें निषिद्ध लशुन आदिको जो अज्ञानआदि से खाया हो (यद्वा) और जो (मम) मेरा (दुश्चरितम्) दुराचरण हो (च) और(असताम्)जिनका दानादि शास्त्रानुकूल निषिद्ध है उनके (प्रतिग्रहम्) दानादिको जो मैंने स्वीकार किया है उन (सर्वं) सब अंशोंमें (माम्) मुझको (आपः) आचमन किये जल (पुनन्तु) पवित्र करें । इसप्रकार मध्याह्नकालमें आचमन किये जो जल हैं वे (स्वाहा) सब प्रकार के पापोंके निवृत्त करने वाले हों ।

सायंकालकी सन्ध्याके समय नीचे लिखे विनियोगको पढकर जल छोड़दे । फिर मन्त्र से आचमन करे ।

ॐ अग्निश्चमेति रुद्रऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

भा०–'अग्निश्च मा' इस मन्त्र का रुद्र ऋषि प्रकृति छन्द, अग्नि देवता, आचमन करने में विनियोग है।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

भा०–इस मन्त्रका अर्थ भी 'सूर्यश्च' इस मन्त्र के समान ही जानना। केवल सूर्य शब्दकी जगह अग्नि और रात्रि शब्दकी जगह 'अह' इतना भेद है।

फिर नीचे लिखे विनियोगको पढ़कर जल छोड़दे।

ॐ आपोहिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्रीच्छन्दः आपोदेवता मार्जने विनियोगः ।

भा०—'आपोहिष्ठा' इत्यादि तीन मन्त्रों का सिन्धुद्वीपऋषि, गायत्री छन्द, जल देवता मार्जन करने में विनियोग है ।

फिर 'आपोहिष्ठा' इत्यादि मन्त्रोंको पढ़ता हुआ मार्जन करे अर्थात् मन्त्रों में से एक १ के क्रम से कुशासे 'आपोहिष्ठा' इत्यादि से मस्तक पर, 'तानऊर्जे' इससे पृथ्वीपर, 'महेरणाय०, इससे हृदय पर 'योवः' इससे भी हृदयपर, 'तस्य भाज०, इससे पृथिवी पर, उशतीरिव०, इससे मस्तक पर,' तस्मा०' इससे भी मस्तक पर, 'यस्यक्ष०' इससे हृदयपर 'आपोजन०' इससे भूमिपर, जल छिड़के ।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवः, तानऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ १ ॥ योवः शिवतमोरसः, तस्यभाज-

यतेहनः । उशतीरिव मातरः ॥ २॥ तस्मा अरंगमाम-
वः, यस्य क्षयाय जिन्वथ, आपोजनयथाचनः ॥ ३ ॥
यजुः० ॥ ११ । ५० । ५१ । ५२ ॥

अन्वय और पदार्थ—हे (आपः) जलो (हि) जिसकारण जो तुम (मयोभुवः) सुखको प्राप्त करने वाले (स्था) हो (ताः) वे वैसे जल देवता तुम (ऊर्जे) नानाप्रकारके आनन्द को वा अन्न-जल-आदिके आनन्दको भोगनेके लिये (दधातन) स्थापित करो (महे) बड़े (रणाय) रमणीय उत्तम मनोहर (चक्षसे) दर्शनके लिये हमको स्थित करो अर्थात परमात्माके दर्शन करने योग्य हमको करो। हे (आपः) जलो (वः) तुम्हारा (यः) जो (शिवतमः) सुखके अनुभवका हेतु (रसः) रस है (इह) इस मार्जनकर्म में वा जगत्में (तस्य) उस रसका (नः) हमको (भाजयते) सेवन

कराओ (उशतीः मातरः—इव) जैसे प्रेमप्रीति में भरके माता अपना दूध बच्चेको पिलाती है वैसे ही हमको तुम सुखी करो। हे (आपः) जल, (यस्य) जिस जगत्की स्थिति के आधारस्वरूप आहुतिके परिणाम रसके (क्षयाय) स्थापनद्वारा ब्रह्मासे लेकर स्थावरपर्यन्त जगत्को (जिन्वथ) तृप्त करते हो (वः) तुम्हारे (तस्मै) उस रसकी (अरम्) पूर्णतृप्ति को (गमाम) हम प्राप्त हों (च) और (नः) हमको ब्रह्मरूप रस के अनुभव में (जनयथ) पूर्ण ब्रह्मज्ञानी करो।

फिर 'द्रुपदादिवेति' नीचे लिखे हुवे विनियोगको पढ़कर जल छोड़े

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलोराजपुत्रऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपोदेवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः।

भा०—द्रुपदादिव' इस मन्त्रका कोकिल राजपुत्र ऋषि

अनुष्टुप् छन्द, जल देवता, सौत्रामणियज्ञान्तर्गत स्नानमें और मार्जनमें विनियोग है।

फिर आगे लिखे 'द्रुपदादिव' मन्त्रको तीन बार पढ़कर सिरपर जल छिड़के

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नःस्नातो मलादिव ॥ पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥ यजु० ॥ अ० २० मं० २० ॥

अन्वय और पदार्थ—(आपः) जलदेवता (मा) मुझको (एनसः) पापसे (शुन्धन्तु) पवित्र करें (इव) जैसे पुरुष सहज में ही (द्रुपदात्) खड़ाऊसे (मुमुचानः) अलग होजाता है (इव) अथवा जैसे (स्विन्नः) पसीना आया हुवा पुरुष (स्नातः) स्नान करके (मलात्) मैलसे छुटता है (वा) या जैसे (पवित्रेण) ऊनी

वस्त्र, अथवा पवित्र से (पूतम्) शुद्ध किया हुवा (आज्यम्) घृत (पवित्र होता है तद्वत् मैं भी इस मन्त्रद्वारा मार्जन करने से पवित्र होजाऊं।

फिर नीचे लिखे विनियोगको पढ़कर जल छोड़े।

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षणऋषिरनुष्टुप्छन्दः। भाववृत्तोदेवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः।

फिर हाथ में जल लेकर 'ऋतंच' इत्यादि मन्त्रको तीनवार पढ़कर जल को नासिका के अग्रभाग से लगाकर अपने शरीर से निकला हुआ पाप समझकर बाईं ओर फेंक देय।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य

मिषतोवशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथोस्वः ॥ ऋ० १० । ११६ ।

विनियोग सहित इस मन्त्रका अर्थ पहिले लिख चुके हैं फिर आगे लिखे हुए 'अन्तश्चरसीति' विनियोगको पढ़कर जल छोड़े

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीनऋषिरनुष्टुप्छन्दः । आपोदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

भा०—'अन्तश्चरसि' इस मन्त्रका तिरश्चीनऋषि, अनुष्टुप् छन्द और जलदेवता आचमन करने में विनियोग है ।

फिर आगे लिखे मन्त्रसे आचमन करे ।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः ।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारआपोज्योतीरसोऽमृतम् ।
ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥

अन्वय और पदार्थ—हे (आपः) जल (त्वम्) तुम (भूतेषु) प्राणियों के (अन्तर्गुहायाम्) अन्तःकरणरूपी गुफा में (चरसि) व्याप्त हो फिर कैसे तुम हो कि (विश्वतोमुखः) सर्वत्र तुम्हारा ही संचार है 'सर्वमापोमयं जगत्' इति स्मृतेः । (त्वम्) तुमही (यज्ञः) यज्ञरूप हो और (त्वम्) तुम ही (वषट्कारः) देवभागरूप हो और (त्वंज्योतिः-रसः अमृतम् ब्रह्मभूः—भुवः—स्वर—ओम्) तुमही तीनों लोकोंमें समस्त प्रकाशित वस्तुओंमें प्रकाशरूप रसोंमें रसरूप परब्रह्म मोक्षस्वरूप हो ।

फिर अंजुलि (दोनों हाथों) में जल लेकर गायत्री मन्त्र पढ़कर प्रातःकाल

और सविता का [illegible] और [illegible] सूर्य को अर्घ्य देवे फिर नीचे लिखे चारों विनियोगों को पढ़कर प्रत्येक विनियोग पर जल छोड़े

ॐ उद्वयन्तमस-इत्यस्य प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ १ ॥ ॐ उदुत्य-मित्यस्यप्रस्कण्वऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता सूर्यो-पस्थाने विनियोगः ॥ २ ॥ ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स-ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ३ ॥ ॐ तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वणऋषिर्ब्राह्मी-त्रिष्टुप्छन्दःसूर्योदेवता सूर्योपस्थानेविनियोगः॥ ४ ॥

भा०—उद्वयन्तम० इस मन्त्र का प्रस्कण्व ऋषि अनुष्टुप्छन्द सूर्य देवता और सूर्य के उपस्थान में विनियोग है ॥ १ ॥ उदु

त्यम्०' इस मन्त्रका प्रस्कण्व ऋषि, गायत्री छन्द, सूर्यदेवता, सूर्यके उपस्थानमें विनियोग है ॥ २ ॥ 'चित्रम्०' इस मंत्रका कौत्स ऋषि, त्रिष्टुप्छंद सूर्य देवता, सूर्यके उपस्थान में विनियोग है ॥ ३ ॥ 'तच्चक्षुः०' इस मंत्रका दध्यङ्ङाथर्वण-ऋषि ब्राह्मी त्रिष्टुप्छंद, सूर्य देवता, सूर्योपस्थान में विनियोग है ॥४॥

फिर सूर्यके सामने मुख करके एक पैरसे खड़ा होकर अथवा एक पैरका केवल आगेका पञ्जा और दूसरा पैर सब पृथ्वीपर टिकाकर प्रातःकाल और सायंकाल में दोनों हाथ मिले हुए फैलावे और मध्याह्न कालमें दोनों हाथ ऊपरको उठाकर आगे लिखे हुए चारों मन्त्रोंको पढ़े ।

ओं उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥ यजुः २० ॥२१॥

ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ २ ॥ यजुः ॥ अ० ७ ॥ ४१ ॥ ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्षछं सूर्यआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥३॥ य० ७ ॥ ४२ ॥ ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतछं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ ४ ॥ यजुः ३६ । २४ ॥

अन्वय और पदार्थ-(तमसः) अन्धकारमय, पृथिवी लोक से (परि) ऊपर (उत्तरम्) सबसे उत्तम (स्वः) स्वर्ग लोक को (पश्यन्तः) देखते हुए तथा (देवत्रा) देवों में (सूर्यम्) सूर्य (देवम्) देवको देखते हुए (वयम्) हमलोग (उत्तमम्) ब्रह्मात्मस्वरूप उत्तम (ज्योतिः) ज्योतिको (उद्-अगन्म) प्राप्त होवें ॥ १ ॥
(जातवेदसम्) सब प्रकारके ज्ञान वा धनके उत्पन्न करनेवाले (देवम्) स्वयं प्रकाशमान (त्यम्) उस प्रसिद्ध (सूर्यम्) सूर्य देवताको (केतवः) किरणसमूह (विश्वाय) सकल संसारके (दृशे) देखनेको (उद्वहन्ति) उदय से लेकर ऊपरको प्राप्त करते हैं॥२॥
(देवानाम्) सब देवताओंके (अनीकम्) समूहरूप और (मित्रस्य) द्युस्थानी मित्रदेव (वरुणस्य) अन्तरिक्षस्थानी वरुण देव (अग्नेः) पृथिवीस्थानी अग्निदेव इन तीनों देवतारूपसमस्तब्रह्माण्ड

का जो (चित्रम्) आश्चर्यरूप (चक्षुः)नेत्र है वह सूर्य (उद्-गात्) उदय होता ऊपरको आता है कि जिसका मैं उपस्थान करता हूं वह सूर्यदेव(द्यावापृथिवी) स्वर्ग और पृथिवी (अन्तरिक्षम्) और अन्तरिक्षलोक को (आप्राः) पूर्ण करता है इस से (जगतः,) जङ्गम, चर (च) और (तस्थुषः)स्थावर अचर सब संसार के (आत्मा) अन्तर्यामी प्रेरक (सूर्यः) सूर्यनारायण ही है । ३ ।(तत्) वह (देवहितम्)देवताओंका हितसाधक (शुक्रम्) निर्मल श्वेतवर्ण (चक्षुः) समस्त प्राणीमात्र का नेत्ररूप सूर्यदेव (पुरस्तात्)पूर्वदिशामें (उच्चरत्) उदय होता है। जिसकी कृपासे हमलोग (शतम्) सौ (शरदः) वर्षतक (पश्येम) देखते रहें और (शतम्) सौ (शरदः) वर्षतक (जीवेम) जीवित रहें (शतम्) सौ (शरदः) वर्षतक (शृणुयाम) सुनते रहें (शतम्) सौ (शरदः)

वर्षतक (प्रब्रवाम) स्पष्ट बोलते रहें (शतम्)सौ (शरदः)वर्ष-तक (अदीनाः स्याम) दीन न हों अर्थात् दरिद्र न होवें (च) और (शतात्) सौ (शरदः) वर्षसे (भूयः) ऊपरभी योगशक्ति द्वारा बहुकाल पर्यन्त जीवें देखें सुने इत्यादि ॥ ४ ॥

फिर आगे लिखे मंत्र को पढ़कर अंगन्यास करे अर्थात् मंत्रों में जिस२ अंगका नाम आवे उस२ अंगको तीनबार मन्त्र पढ़कर स्पर्श करे॥

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ भूः शिरसे स्वाहा ॥२॥ ओं भुव शिखायै वषट्॥३॥ओं स्वः कवचायहुम् ॥ ४ ॥ ओं भूर्भुवः नेत्र त्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ओं भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

फिर आगे लिखे विनियोग को पढ़कर जल छोड़े ।

ओं तेजोऽसीति देवाऋषयः शुक्रं देवतं गायत्री-

छन्दोगायत्र्यावाहने विनियोगः ।

भा०—"तेजोऽसि" इस मन्त्रके देवता ऋषि, शुक्र देवता, गायत्री छन्दः गायत्री के आवाहन में विनियोग है ।

फिर हाथ जोड़ कर आगे लिखे मंत्रसे गायत्री देवताका आवाहन करे

ओं तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।

अन्वय और पदार्थ—हे गायत्रि (त्वम्)तू (तेजः) सब तेजों का तेज (असि) है (शुक्रम्) सब पराक्रमोंका पराक्रम है (अमृतम्)मोक्षस्वरूप है (धाम) सबका स्थानरूपहै (नाम)सबका नामरूप है और (यत्) जो (देवानाम्) देवतों का (अनाधृष्टम्) उत्कृष्ट अत्यन्त (प्रियं) प्रियकारक (देवयजनम्) मन्त्रसमूह मोक्षसाधन है (तत् त्वमेवासि) वह तूही है ।

फिर आगे लिखे मन्त्रसे गायत्री का उपस्थान करे ।

ओं गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदोमाप्रापत् ॥

अन्वय और पदार्थ–हे गायत्रि (त्वम्) तुम प्राणों की रक्षा करनेवाली (असि) हो (एकपदी) स्वर्ग–पृथ्वी–अन्तरिक्ष त्रिलोकीमें एकपदसे व्याप्त हो (द्विपदी) ऋग्–यजुः–साम–त्रयीविद्यामें दूसरे पदसे व्याप्त हो (त्रिपदी) प्राण–अपान-व्यानादि पंच प्राणोंमें तीसरे पदसे व्याप्त हो, (चतुष्पदी) अपने रूपमें तुरीय पदसे व्याप्त (असि) हो, इसप्रकार चारों पदोंसे उपासकों को प्राप्त होती हो। विना उपासना किये तुम (अपद्) अप्राप्य

(असि) हो (हि) क्योंकि--मन वाणीसे भी अगम्य आत्मस्वरूप होनेसे (न पद्यसे) भक्ति श्रद्धाके बिना नहीं प्राप्त होसकती हो इसकारण (ते) तुम्हारे (परोरजसे) शुद्ध सत्वस्वरूप (दर्शताय) श्रद्धापूर्वक ध्यानसे देखने योग्य (तुरीयाय पदाय) तुरीय ब्रह्म ज्ञानस्वरूप चतुर्थपदके अर्थ (नमः) नमस्कार है। हम प्रार्थना करते हैं कि (असौ) वह तुम्हारे ध्यानमेंविघ्नकारी पापरूपीशत्रु (अदः) उस आत्मज्ञानरूपी कार्य में (माप्रापत्) प्राप्त न हो

फिर नीचे लिखे तीनों विनियोगों को पढ़कर जल छोड़े।

ओंकारस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवताशुक्लो वर्णः जपे विनियोगः ॥ १ ॥ ओं त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगानुष्टुप्छन्दांसि । अग्निवायु-

सूर्योदेवता जपे विनियोगः॥२॥ ओं गायत्र्याविश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः॥३॥

फिर गायत्री मन्त्रको यथाशक्ति एकाग्रचित्त होकर जप करे। तदनन्तर आगे लिखे मंत्र से गायत्रीका विसर्जन करे।

ओं देवागातुविदोगातु वित्त्वागातुमित मनसस्पतइमं देवयज्ञ छं स्वाहा वातेधाः॥ य० अ० २। २१॥

अन्वय और पदार्थ—हे (देवाः) हे, गायत्री आदि देवता. यूयं (गातुविदः) तुम मनुष्यके किये हुए यज्ञादि कर्मके जानने वाले हो इसकारण तुम (गातुम्) यज्ञको (वित्वा) पूर्णहुआ समझकर इस यज्ञस्थानसे (गातुमित) सुखपूर्वक अपने दिव्यस्थानको प्राप्त हूजिये (हे मनसस्पते) हे अन्तर्यामिन् ब्रह्मन् (इमम्) इस (देवयज्ञम्) देवयज्ञको (स्वाहा वातेधाः) सर्वव्यापी अपने में स्थापित

कीजिये अर्थात् हमलोगोंका किया हुआ सन्ध्यादि कर्म ब्रह्मार्पण हो।

ॐ उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतमूर्द्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ॥

अन्वय और पदार्थ—(भूम्याम्) पृथिवी पर जो (पर्वतमूर्द्धनि) समस्त पर्वतोंमें ऊंचा सुमेरु उसके (उत्तमे) श्रेष्ठ (शिखरे) शिखर पर (जाते) प्रादुर्भाव हुई है (हे देवि) हे प्रकाशमाति गायत्रि देवि तू (ब्राह्मणेभ्यः) ब्राह्मण क्षत्रिय-वैश्योंके अर्थ (अभ्यनुज्ञाता) प्रसन्न हुई (यथासुखं) सुखपूर्वक (गच्छ) स्वस्थानको प्राप्त हो।

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

अन्वय और पदार्थ-हे परमेश्वर देव! इस सन्ध्या में जो कर्म अक्षर पदसे भ्रष्ट अथवा मात्राहीन हुआ हो उस सबको क्षमा कर के प्रसन्न हूजिए॥ इति॥